अल नीनो के कमजोर होने से बंधी मानसून की आस

रबी की फसल पकते ही खरीफ की तैयारियों में जुटे किसान की सबसे बड़ी चिंता मानसून को लेकर खड़ी हो जाती है। मानसून बढ़िया रहा तो उसकी बल्ले-बल्ले, प्रतिकूल रहा तो उसकी फसल को चौपट होने से कोई नहीं बचा सकता है। कृषि ही क्यों, भारत की पूरी अर्थव्यवस्था ही प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से इस मानसून से प्रभावित होती है। जल समस्या पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है। लगातार दो साल सूखा रहने के बाद इस बार मानसून को लेकर उम्मीद बंधती दिख रही है। हालांकि आगामी मानसून के पहले पूर्वानुमान में अभी करीब तीन सप्ताह का समय है लेकिन वैज्ञानिकों का अनुमान है कि मानसून के बेहतर रहने वाली उपयुक्त दशाएं अभी से बनती दिखने लगी हैं। पूरे देश में मानसूनी बारिश को प्रभावित करने वाला अल नीनो उत्तरोत्तर कमजोर हो रहा है। अंतरराष्ट्रीय जलवायु मॉडल बताते हैं कि आगामी मई माह तक यह बेअसर हो जाएगा।

अल नीनो दशा

भूमध्य रेखा पर प्रशांत महासागर की सतह के तापमान में असामान्य वृद्धि अल नीनो दशा कहलाती है। जलवायु परिवर्तन के चलते खड़ी हुई इस समस्या ने दुनिया के कई मौसम चक्रों पर प्रतिकूल असर डाला है। जून से सितंबर तक भारतीय क्षेत्रों में उमड़-घुमड़ कर बारिश के लिए जिम्मेदार दक्षिण-पश्चिम मानसून भी इससे गंभीर रूप से प्रभावित होता है। पिछले साल सूखे के लिए यही कारक जिम्मेदार रहा है। सर्दियों में बारिश का न होना भी इसी के चलते हुआ।

पिछले मानसून सीजन से हुई बारिश

(मिमी में)

माह	वास्तविक बारिश	सामान्य बारिश	कमी/अधिकता (फीसद में)
जून	190.1	163.6	16
जुलाई	241.0	289.2	-17
अगस्त	204.7	261.3	-22
सितंबर	131.4	173.4	-24
अक्टूबर	42.9	80.9	-47
नवंबर	40.0	29.7	35
दिसंबर	15.1	16.6	-9
जनवरी, 16	7.8	19.2	-59
फरवरी, 16	10.1	22.2	-54
मार्च, 16	25.0	22.1	13

(देश भर में) *23 मार्च तक*

ला निना

अमेरिकी नेशनल ओसियानिक एंड एटमॉस्फारिक एडमिनिस्ट्रेशन के क्लाइमेट प्रीडिक्शन सेंटर द्वारा जारी पिछले बुलेटिन के मुताबिक अगस्त तक ला निना दशा के बनने की पचास फीसद संभावनाएं हैं। यह मौसमी दशा अल नीनो के एकदम उलट होती है। इसमें भूमध्य रेखा पर प्रशांत महासागर की सतह असामान्य रूप से ठंडी हो जाती है। इससे मानसूनी महीनों में भारत में झमाझम बारिश होती है।

अपवाद

हालांकि मानसूनी बारिश को प्रभावित करने वाले कई कारकों में से अल नीनो एक है। अल नीनो के बेअसर होने का मतलब यह नहीं है कि अनिवार्य रूप से अच्छी बारिश होगी। हालांकि अल नीनो का कमजोर होना अच्छी खबर इस मायने में है कि मानसून को नकारात्मक रूप से प्रभावित करने वाला कम से कम एक बड़ा कारक बेअसर रहेगा। इनके साथ मानसून के प्रभावित करने वाले अन्य कारक भी जिम्मेदार होंगे। अप्रैल के तीसरे सप्ताह में भारतीय मौसम विभाग द्वारा जारी किए जाने वाले मानसून के पहले पूर्वानुमान में स्थितियां ज्यादा स्पष्ट हो सकेंगी।